Semester-1. MJC 2025-2029

Bases of Emotions

संवेगों का मनुष्य के जीवन में बहुत महत्व है। मनुष्य के बहुत-से कार्य के अभिप्रेरक संवेग हैं। संवेग एक मनोशारीरिक उत्तेजना की दशा है। संवेग के तीन आधार हैं।

(1) संज्ञानात्मक आधार (Cognitive basis)
(2) शारीरिक आधार (Physical basis)
(3) सांस्कृतिक आधार (Cultural basis)

(1). संवेगों के संज्ञानात्मक आधार (Cognitive Basis of Emotions) - संवेग व्यक्ति के किसी संज्ञान पर निर्भर करता है। जब प्राणी किसी संवेग पैदा करने वाले उद्दीपक को देखता है। आँख में तंत्रिका - आवेग (Nerve-impulse) पैदा होता है। ज्ञानवाही तंत्रिका (Sensory nerves) के द्वारा प्रमस्तिष्क (cortex) के महत्वपूर्ण भाग में जाता है। संवेग की दशा के निमित्त है। शारीरिक उत्तेजना और संज्ञानात्मक विवेचन, प्राणी किसी बाहरी उद्दीपक के द्वारा उत्तेजित होता है। तब उसे उद्वेजन का आभास संवेग की अनुभूति पैदा करता है। प्राणी बाह्य वातावरण का अवलोकन करता है। प्राणी किसी कारक को देखकर हर्षित होता है, तो उसमें शारीरिक उद्वेजन की उत्तेजना शुरू होती है तथा स्वयं की मानसिक अनुभूति भी।

(ii) संवेगों के सांस्कृतिक आधार - (Cultural Basis of Emotions) - संवेगों पर कुछ शोध नहीं पाये हैं कि संवेग की उत्पत्ति तथा अभिव्यक्ति संस्कृति पर भी निर्भर करती है।

Scanned with OKEN Scanner

शिव संस्कृति के अन्तर्गत साँप की पूजा की जाती है जहाँ आमतौर बचपन से साँपों के साथ रहते और खेलते है। वहीं उन्हें साँपों से डर नहीं लगता, दूसरी ओर शिव संस्कृति में बचपन से यह बताया जाता है कि साँप अत्यधिक जहरीला होता है तथा उसके काटने से मानव की मृत्यु भी हो जाती है। उसमें साँप लोगों के लिए डर पैदा करने वाला उद्दीपक बन जाता है। भौतिक संवेग की अभिव्यक्तियाँ या प्रतिक्रियाएँ भी किसी हद तक संस्कृति जन्य होती है। शिव संस्कृति के अन्तर्गत मुक्त संवेगात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित किया जाता है। मानव स्त्री में अत्यधिक खुश होकर हँसते है तथा दुःखद स्थिति में जोर जोर से चिल्लाकर रोते है। आधुनिक युग में शिक्षित तथा विकसित संस्कृति में पुरुष और स्त्री दोनों ही परिस्थितियों में [illegible] संतत रूप से अपनी संवेग अभिव्यक्ति प्रदर्शित करते है।

संवेगात्मक अनुभव की विकास और उसकी अभिव्यक्ति की ढंग संस्कृति पर आधारित होती है। संवेगों का मनुष्य के जीवन में बहुत महत्व है। मनुष्य का संतुलन संवेगों की अवस्था में बिगड़ जाता है। संवेग में मनुष्य को [illegible] शांत करने की प्रेरणा भी मिलती है

Teacher's Signature: PKG 10/10/25